गुजरात स्टेट लेवल अेलीजीबीलीटी टेस्ट

Code No. : 05

विषय : हिन्दी

पाठ्य विवरण तथा नमूने के प्रश्न

Note: There will be two question papers, Paper—II and Paper—III. Paper-II shall consist of 50 objective type compulsory questions based on the subject selected by the candidate. Each question will carry 2 marks. Paper-III will consist of 75 objective type compulsory questions from the subject selected by the candidate. Each question will carry 2 marks. All questions of Paper-II and Paper-III will be compulsory, covering entire syllabus (including all electives, without options).

प्रश्न-पत्र–II

1. हिन्दी भाषा और उसका विकास

अपभ्रंश (अवहट्ठ सहित) और पुरानी हिन्दी का सम्बन्ध, काव्यभाषा के रूप में अवधी का उदय और विकास, काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा का उदय और विकास, साहित्यिक हिन्दी के रूप में खडी बोली का उदय और विकास, मानक हिन्दी का भाषा वैज्ञानिक विवरण (रूपगत), हिन्दी की बोलियाँ–वर्गीकरण तथा क्षेत्र, नागरी लिपि का विकास और उसका मानकीकरण।

हिन्दी प्रसार के आन्दोलन, प्रमुख व्यक्तियों तथा संस्थाओं का योगदान, राजभाषा के रूप में हिन्दी।

हिन्दी भाषा-प्रयोग के विविध रूप-बोली, मानकभाषा, सम्पर्कभाषा, राजभाषा और राष्ट्रभाषा, संचार माध्यम और हिन्दी।

2. हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य का इतिहास-दर्शन, हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की पद्धतियाँ।

हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहास-ग्रन्थ, हिन्दी के प्रमुख साहित्यिक केन्द्र, संस्थाएँ एवं पत्र-पत्रिकाएँ, हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन और नामकरण।

आदिकाल : हिन्दी साहित्य का आरम्भ कब और कैसे ? रासो-साहित्य, आदिकालीन हिन्दी का जैन साहित्य, सिद्ध और नाथ साहित्य, अमीर खुसरो की हिन्दी कविता, वि□ापति और उनकी पदावली, आरम्भिक ग□ तथा लौकिक साहित्य।

मध्यकाल : भक्ति-आन्दोलन के उदय के सामाजिक-सांस्कृतिक कारण, प्रमुख निर्गुण एवं सगुण सम्प्रदाय, वैष्णव भक्ति की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आलवार सन्त, प्रमुख सम्प्रदाय और आचार्य, भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्तःप्रादेशिक वैशिष्ट्य।

हिन्दी सन्त काव्य : सन्त काव्य का वैचारिक आधार, प्रमुख निगुण सन्त कवि कबीर, नानक, दादू, रैदास, सन्त काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, भारतीय धर्म साधना में सन्त कवियों का स्थान।

हिन्दी सूफी काव्य : सूफी काव्य का वैचारिक आधार, हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य–मूल्ला दाऊद (चन्दायन), कुतुबन (मिरगावती), मंझन (मधुमालती), मलिक मुहम्मद जायसी (पद्मावत), सूफी प्रेमाख्यानकों का स्वरूप, हिन्दी सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ।

हिन्दी कृष्ण काव्य : विविध सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, अष्टछाप, प्रमुख कृष्ण-भक्त कवि और काव्य, सूरदास (सूरसागर), नन्ददास (रास पंचाध्यायी), भ्रमरगीत परम्परा, गीति परम्परा और हिन्दी कृष्ण काव्य–मीरा और रसखान।

हिन्दी राम काव्य : विविध सम्प्रदाय, राम भक्ति शाखा के कवि और काव्य, तुलसीदास की प्रमुख कृतियाँ, काव्य रूप और उनका महत्त्व।

रीति काल : सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, रीतिकाव्य के मूल स्रोत, रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रीतिकालीन कवियों का आचार्यत्व, रीतिमुक्त काव्यधारा, रीतिकाल के प्रमुख कवि : केशवदास, मतिराम, भूषण, बिहारीलाल, देव, धनानन्द और पद्माकर, रीतिकाव्य में लोकजीवन।

आधुनिक काल : हिन्दी ग□ का उद्भव और विकास।

भारतेन्दु पूर्व हिन्दी ग□, 1857 की राज्य क्रान्ति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, भारतेन्दु और उनका मण्डल, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की हिन्दी पत्रकारिता।

द्विवेदी युग : महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका, युग, हिन्दी नवजागरण और सरस्वती, मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा, राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि, स्वच्छन्दतावाद और उसके प्रमुख कवि।

छायावाद और उसके बाद : छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, छायावाद के प्रमुख कवि : प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी, उत्तर छायावादी काव्य और उसके प्रमुख कवि–प्रगतिशील काव्य और उसके प्रमुख कवि, प्रयोगवाद और नई कविता, नई कविता के कवि, समकालीन कविता, समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता।

3. हिन्दी साहित्य की ग□ विधाएँ

हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्द पूर्व उपन्यास, प्रेमचन्द और उनका युग, प्रेमचन्द के परवर्ती प्रमुख उपन्यासकार, जैनेन्द्र, अज्ञेय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, यशपाल, अमृतलाल नागर, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, निर्मल वर्मा, नरेश महेता, श्रीलाल शुक्ल, राही मासूम रजा, रांगेय राघव, मन्नू भण्डारी।

हिन्दी कहानी : बीसवीं सदी की हिन्दी कहानी और प्रमुख कहानी आन्दोलन।

हिन्दी नाटक : हिन्दी नाटक और रंगमंच, विकास के चरण और प्रमुख नाट्यकृतियाँ : अंधेर नगरी, चन्द्रगुप्त, अंधायुग, आधे-अधूरे, आठवा सर्ग, हिन्दी एकांकी।

हिन्दी निबन्ध : हिन्दी निबन्ध के प्रकार और प्रमुख निबन्धकार–रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय, वि□ानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई।

हिन्दी आलोचना : हिन्दी आलोचना का विकास और प्रमुख आलोचक : रामचन्द्र शुक्ल, नन्द दुलारे बाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० नामवर सिंह, विजयदेव नारायण साही।

हिन्दी की अन्य ग□ विधाएँ : रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा-साहित्य, आत्मकथा, जीवनी और रिपोर्ताज।

4. काव्यशास्त्र और आलोचना

भरत मुनि का रस सूत्र और उसके प्रमुख व्याख्याकार।

रस के अवयव।

साधारणीकरण।

शब्द शक्तियाँ और ध्वनि का स्वरूप।

अलंकार–यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रान्तिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति, अत्युक्ति, विशेषोक्ति, दृष्टान्त, उदाहरण, प्रतिवस्तूपमा, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, विभावना, असंगति तथा विरोधाभास।

रीति, गुण, दोष।

मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक और बिम्ब।

स्वच्छन्दतावाद और यथार्थवाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता।

समकालीन आलोचना की कतिपय अवधारणाएँ : विडम्बना (आयरनी), अजनबीपन (एलियनेशन), विसंगति (एब्सर्ड), अन्तर्विरोध (पैराडॉक्स), विखण्डन (डीकन्स्ट्रक्शन)।

प्रश्न-पत्र–III (A)

(बीज पाठ्यक्रम)

इकाई–I

भक्ति काव्य की पूर्व-पीठिका, सिद्ध-जैन नाथ साहित्य, पदावली तथा लौकिक साहित्य।

भक्ति-काव्य का स्वरूप, भेद, निर्गुण-सगुण का सम्बन्ध, साम्य और वैषम्य।

कबीर : भक्ति-भावना, समाज-दर्शन, विद्रोह-भावना, काव्य-कला।

जायसी : प्रेम-भावना, लोक तत्त्व, कथानक रूढि, काव्य-दृष्टि।

सूरदास : भक्ति-भावना, वात्सल्य-वर्णन, गीति-तत्त्व।

तुलसीदास : भक्ति-भावना, सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि, लोकमंगल, काव्य-दृष्टि।

इकाई–II

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, विविध काव्य-धाराएँ।

केशव : आचार्यत्व, काव्य-दृष्टि, संवाद-योजना।

बिहारी : सौन्दर्य-भावना, बहुज्ञता, काव्य-कला।

भूषण : युग-बोध, अन्तर्वस्तु, काव्य-कला।

घनानन्द : स्वच्छंद योजना, प्रेम-व्यंजना, काव्य-दृष्टि।

इकाई–III

आधुनिकता : अवधारणा और उसके उदय की पृष्ठभूमि, हिन्दी पुनर्जागरण और भारतेन्दु ।

महावीर प्रसाद द्विवेदी : नवजागरण, काव्य भाषा के रूप में खडी बोली की प्रतिष्ठा, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त ।

छायावाद : सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि, वैचारिक पृष्ठभूमि, स्वाधीनता की चेतना, गाँधी का प्रभाव, अन्तर्धाराएँ, राष्ट्रीय काव्य-धारा ।

प्रसाद : जीवन-दर्शन, सांस्कृतिक दृष्टि, सौन्दर्य चेतना ।

पंत : प्रकृति-चित्रण, काव्य-यात्रा, काव्य-भाषा ।

निराला : सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि, प्रगति-चेतना, मुक्त छंद ।

महादेवी : वेदना-तत्त्व, प्रगीति, प्रतीक-योजना ।

इकाई–IV

वैचारिक पृष्ठ भूमि, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद ।

प्रगतिवाद : सामाजिक दृष्टि, नागार्जुन-यथार्थ चेतना और लोक-दृष्टि, केदारनाथ अग्रवाल–प्रकृति चित्रण और सौन्दर्य-बोध ।

प्रयोगवाद : व्यष्टि-चेतना, अज्ञेय–प्रयोगधर्मिता और काव्य-भाषा ।

नयी कविता : व्यष्टि-समष्टि-बोध, मुक्तिबोध–समाज-बोध, फैंटसी ।

समकालीन कविता : काल संसक्ति और लोक संसक्ति, रघुवीर सहाय – राजनीतिक चेतना, काव्य-भाषा, कुंवर नारायण–मिथकीय चेतना, काव्य-दृष्टि ।

इकाई–V

गल्प और इतिहास, कल्पना और यथार्थ ।

प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास : परीक्षा गुरु, चन्द्रकांता–वस्तु और शिल्प ।

प्रेमचन्द युगीन उपन्यास : गोदान–मुख्य पात्र, यथार्थ और आदर्श, वस्तु-शिल्प वैशिष्ट्य ।

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास : शेखर एक जीवनी–वस्तु-शिल्पगत वैशिष्ट्य, मैला आँचल–वस्तु-शिल्प, आंचलिकता ।

बाणभट्ट की आत्मकथा–इतिहास और संस्कृति चेतना, भाषा-शिल्प वैशिष्ट्य ।

कहानी और प्रमुख कहानीकार–प्रेमचन्द और प्रसाद की कहानी-कला, प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी और नयी कहानी, संवेदना और शिल्प ।

इकाई–VI

हिन्दी नाटक और भारतेन्दु : भारत-दुर्दशा, अंधेर नगरी, यथार्थ बोध ।

प्रसाद के नाटक : चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना, नाट्य-शिल्प ।

प्रसादोत्तर नाटक : अंधायुग, आधे-अधूरे–आधुनिकता बोध, प्रयोगधर्मिता और नाट्य-भाषा ।

निबन्ध और प्रमुख निबन्धकार : बालकृष्ण भट्ट, रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि, अन्तर्वस्तु और शिल्प।

शुक्लोत्तर निबन्ध और निबन्धकार : हजारी प्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय, वि□ानिवास मिश्र, संस्कृति-बोध, लोक-संपृक्ति।

इकाई–VII

काव्य-हेतु और काव्य-प्रयोजन।

प्रमुख सिद्धान्त–रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य-सामान्य परिचय।

रस-निष्पत्ति।

हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास।

आधुनिक हिन्दी आलोचना और प्रमुख आलोचक –रामचन्द्र शुक्ल और रस-दृष्टि तथा लोकमंगल की अवधारणा, नन्ददुलारे वाजपेयी–सौष्ठववादी आलोचना। रामविलास शर्मा–मार्क्सवादी समीक्षा।

इकाई–VIII

प्लेटो और अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त तथा अरस्तू का विरेचन सिद्धान्त।

लोंजाइनस : काव्य में उदात्त तत्व।

क्रोचे का अभिव्यंजनावाद।

आई० ए० रिचर्ड्स-संप्रेषण सिद्धान्त।

नयी समीक्षा।

इकाई–IX

कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी–दोहा-पद सं० 160-209

जायसी ग्रंथावली-सं- रामचन्द्र–नागमती वियोग वर्णन

सूरदास–भ्रमरगीत-सार-सं० रामचन्द्र शुक्ल 21 से 70 तक

तुलसीदास–राजचरितमानस–गीता-प्रेस, गोरखपुर–उत्तरकाण्ड।

छायावाद : प्रसाद–कामायनी–श्रद्धा, इडा सर्ग

निराला–राम की शक्ति-पूजा, कुकुरमुत्ता

नई कविता : अज्ञेय–असाध्यवीणा, नदी के द्वीप

मुक्तिबोध–अंधेरे में

इकाई–X

उपन्यास : प्रेमचन्द–गोदान

अज्ञेय–शेखर एक जीवनी, भाग 1

नाटक :	प्रसाद–चन्द्रगुप्त

मोहन राकेश–आधे-अधूरे

प्रश्न-पत्र–III (B)

(एच्छिक/वैकल्पिक)

ऐच्छिक–I

भक्ति-काव्य : स्वरूप और भेद, निर्गुण और सगुण का सम्बन्ध : साम्य और वैषम्य।

कबीर : निर्गुण का स्वरूप, कबीर के राम और तुलसी के राम में अन्तर, रहस्य साधना, कबीर का समाज दर्शन और उनकी प्रासंगिकता, कबीर : कवि के रूप में।

जायसी : सांस्कृतिक दृष्टि, प्रेम-भावना, पद्मावत में लोक-तत्त्व, संस्कृति, प्रकृति-चित्रण, सौन्दर्य दृष्टि, रूपक तत्त्व।

सूरदास : भक्ति-भावना, माधुर्य और शृंगार वर्णन, लोक-तत्त्व, सौन्दर्य-बोध, प्रकृति-चित्रण, भ्रमरगीत, अंतर्वस्तु और विदग्धता, गीति-तत्त्व, लीला-भाव, बाल-लीला वर्णन का वैशिष्ट्य।

तुलसीदास : तुलसी की रचनाएँ, भक्ति-दर्शन, मानस की प्रबन्ध कल्पना, मर्यादा भाव, चित्रकूट सभा का महत्त्व, सामाजिक-पारिवारिक आदर्श, युग-बोध रामराज्य की परिकल्पना, तुलसी की काव्य-दृष्टि।

ऐच्छिक–II

स्वच्छन्दतावाद और छायावाद, छायावाद में रहस्यानुभूति का स्वरूप, छायावादी कविता में स्वच्छन्द कल्पना, छायावादी कवियों की राष्ट्रीय-सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना, छायावादी काव्य में नारी छायावादी कवियों का सौन्दर्य-बोध, छायावादी काव्य में प्रगीति तत्व। छायावाद की काव्य-भाषा, छायावाद : शक्ति काव्य, प्रबन्ध कल्पना की नवीनता।

प्रसाद का जीवन दर्शन, समरसता और आनन्दवाद, सौन्दर्य बोध, कामायनी में रूपक तत्व, कामायनी का प्रबन्ध विन्यास, कामायनी का आधुनिक सन्दर्भ, कामायनी की विश्व-दृष्टि।

निराला के प्रगति, निराला की प्रगति चेतना, निराला के प्रयोग के विविध आयाम, लम्बी कविताएँ, राम की शक्ति-पूजा, बादल राग कुकुरमुत्ता, मुक्त छन्द : अवधारणा और प्रयोग।

पन्त की काव्य-यात्रा के विविध सोपान–पल्लव की भूमिका, प्रकृति-चित्रण, कल्पनाशीलता, सौन्दर्य चेतना, पन्त की काव्य-भाषा।

महादेवी के काव्य में रहस्यवाद, वेदना भाव, गीति-तत्व, महादेवी की काव्य-भाषा–बिम्ब विधान।

ऐच्छिक–III

मध्य वर्ग का उदय और उपन्यास, उपन्यास और यथार्थ तथा उसके विविध रूप, उपन्यास में इतिहास, कल्पना और आधुनिकता।

प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास, हिन्दी उपन्यास और स्वाधीनता आन्दोलन, स्वाधीन भारत के प्रमुख हिन्दी उपन्यास, हिन्दी उपन्यास में नायक और नायिका की अवधारणा तथा उसके बदलते स्वरूप, हिन्दी उपन्यास में शिल्पगत प्रयोग।

गोदान और भारतीय किसान, गोदान में गाँव और शहर, महाकाव्यात्मक उपन्यास की परिकल्पना, गोदान के मुख्य चरित्र, गोदान में यथार्थ और आदर्श, गोदान का शिल्प।

शेखर एक जीवनी में शेखर के चरित्र का वैशिष्ट्य, भाषा और शिल्पगत प्रयोग, वस्तु व्यंजना, उपन्यास और काव्यात्मकता, मनोवैज्ञानिक आयाम।

बाणभट्ट की आत्मकथा, आत्मकथा का तात्पर्य, इतिहास और कल्पना, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आधुनिकता, निपुणिका और नारी-मुक्ति की आकांक्षा, भाषा-सौष्ठव।

मैला आँचल–आंचलिक उपन्यास की अवधारणा, वस्तु विन्यास और शिल्प, लोक-संस्कृति और भाषा, ग्राम जीवन में होने वाले आर्थिक राजनैतिक परिवर्तन और सामाजिक गतिशीलता का चित्रण।

हिन्दी कहानी–प्रेमचन्द, प्रसाद, जैनेन्द्र, प्रेमचन्दोत्तर युग की कहानी, नई कहानी, साठोत्तरी कहानी, समकालीन कहानी, शिल्प और संवेदना।

कथा-साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श।

ऐच्छिक–IV

काव्य के लक्षण : शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् (भामह), तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि (मम्मट), वाक्य रसात्मकं काव्यम् (विश्वनाथ), रमणीयार्थ-प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् (पण्डितराज जगन्नाथ), काव्य की आत्मा।

विविध सम्प्रदाय, प्रमुख सिद्धान्त-रस, अलंकार रीति, ध्वनि वक्रोक्ति और औचित्य।

रस का स्वरूप और साधारणीकरण।

सहृदय की अवधारणा।

ऐच्छिक–V

हिन्दी आलोचना–रामचन्द्र शुक्ल और उनके आलोचनात्मक प्रतिमान।

शुक्लोत्तर समीक्षा और समीक्षक–हजारी प्रसाद द्विवेदी, नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ० रामविलास शर्मा, डॉ० नामवर सिंह, विजयदेव नारायण साही, समकालीन आलोचना।

ऐच्छिक–VI

प्लेटो और अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त तथा अरस्तू का विरेचन सिद्धान्त।

वड्सवर्थ का काव्य-भाषा सिद्धान्त।

कालरिज कल्पना और फैन्सी।

आई० ए० रिचर्ड्स–मूल्य सिद्धान्त तथा काव्य-भाषा सिद्धान्त।

टी० एस० इलिएट–निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, वस्तुनिष्ठ सह-सम्बन्धी, परम्परा की अवधारणा।

रुसी-रूपवाद, नयी समीक्षा।

संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता, विखण्डनवाद।